**सामाजिक मनोविज्ञान में सर्वेक्षण (Survey) तथा सह-सम्बन्धीय विधि (Correlational Method)**

**1. सर्वेक्षण विधि (Survey Method)**

| **पहलू** | **विवरण** |
| --- | --- |
| **परिभाषा** | सर्वेक्षण एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसमें शोधकर्ता किसी निर्धारित जनसंख्या (population) या उसके नमूने (sample) से प्रश्नावली, साक्षात्कार या ऑनलाइन फ़ॉर्म के माध्यम से जानकारी एकत्र करते हैं। |
| **उद्देश्य** | 1. विश्वास, दृष्टिकोण, मूल्यों व व्यवहारों का मापन 2. बड़ी जनसंख्या के रुझानों की पहचान 3. सामाजिक घटनाओं के पूर्वानुमान तथा नीति-निर्माण हेतु आँकड़े जुटाना |
| **प्रमुख चरण** | 1. **समस्या एवं उद्देश्य निर्धारण** – शोध-प्रश्न स्पष्ट करें।2. **लक्षित जनसंख्या एवं नमूना चयन** – यादृच्छिक (random), स्तरीकृत (stratified) आदि।3. **साधन विकास** – प्रश्नावली/साक्षात्कार-सूची; खुले-बंद प्रश्न, लाइकेर्ट स्केल।4. **पायलट-टेस्ट व विश्वसनीयता जाँच** – Cronbach’s α, पुनःपरीक्षण विधि।5. **डेटा संग्रह** – ऑनलाइन, फोन, फ़ील्ड-विज़िट।6. **डेटा प्रविष्टि व विश्लेषण** – सांख्यिकीय पैकेज (SPSS, R) में।7. **रिपोर्ट लेखन** – निष्कर्ष, सीमाएँ, नीतिगत निहितार्थ। |
| **सामाजिक-मनोवैज्ञानिक अनुप्रयोग** | • पूर्वाग्रह (prejudice) या रूढ़िबोध (stereotypes) की व्यापकता मापना।• विभिन्न समूहों के बीच सामाजिक दूरी (social distance) का आकलन।• जनमत (public opinion) व बहुसंख्यक प्रभाव (majority influence) के अध्ययन। |
| **सार्थकता** | • कम लागत में बड़े नमूने तक पहुँचना।• डेटा संकलन तेज़ व तुलनात्मक रूप से सरल। |
| **सीमाएँ** | • स्व-रिपोर्ट पूर्वाग्रह (social desirability bias)।• प्रश्नों की गलत समझ, कम प्रतिक्रिया दर।• कारण-परिणाम (causality) नहीं बताता, केवल सह-सम्बन्ध दिखाता। |

**2. सह-सम्बन्धीय विधि (Correlational Method)**

| **पहलू** | **विवरण** |
| --- | --- |
| **परिभाषा** | सह-सम्बन्धीय अध्ययन में दो या अधिक चर (variables) के बीच सांख्यिकीय सह-संबंध का निर्धारण किया जाता है—यानी जब एक चर बदलता है तो दूसरा चर किस हद तक और किस दिशा में बदलता है। |
| **उद्देश्य** | • परिवर्तनों की **दिशा (direction)**: धनात्मक (+) या ऋणात्मक (–)।• **प्रभाव-आकार (strength)**: सह-सम्बन्ध गुणांक *r* (–1 से +1)।• **भविष्य-वाणी** (prediction) के लिए मॉडल बनाना। |
| **मुख्य प्रकार** | 1. **सरल सह-सम्बन्ध (Pearson r)** – दो सतत चरों के लिए।2. **Spearman ρ / Kendall τ** – क्रमिक (ordinal) आँकड़ों हेतु।3. **आंशिक सह-सम्बन्ध (Partial r)** – तीसरे चर को नियंत्रित कर प्रभाव देखना।4. **पथ-विश्लेषण, संरचनात्मक समीकरण मॉडल (SEM)** – जटिल सह-सम्बन्धी नेटवर्क। |
| **प्रक्रिया** | 1. **चर परिभाषा व मापन** – मानकीकृत उपकरणों का चयन।2. **नमूना चयन व डेटा संग्रह** – प्रायः सर्वेक्षण या मौजूदा डेटासेट।3. **डेटा तैयारी** – Missing values, सांख्यिकीय धारणाओं की जाँच।4. **सह-सम्बन्धी विश्लेषण** – r, r², p-value की गणना।5. **व्याख्या** – सह-सम्बन्ध की दिशा, प्रभाव-आकार, व्यावहारिक महत्व। |
| **सामाजिक-मनोवैज्ञानिक उपयोग** | • आत्म-सम्मान और सोशल-मीडिया उपयोग के बीच सम्बन्ध।• समूह-पहचान व पूर्वाग्रह के स्तर का सह-सम्बन्ध।• सामाजिक समर्थन व तनाव-स्तर के सह-संबंध से मानसिक स्वास्थ्य पूर्वानुमान। |
| **सार्थकता** | • प्रयोगात्मक (experimental) अध्ययन सम्भव न हो तो वैकल्पिक मार्ग।• वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में प्राकृतिक भिन्नता से सीख। |
| **सीमाएँ** | • **कारणता का अभाव** – ‘सह-सम्बन्ध कारण नहीं है’ (correlation ≠ causation)।• **तीसरा-चर समस्या** (third-variable problem)।• **दिशा-की-समस्या** – कौन-सा चर पहले आता है, अनिश्चित। |

**3. तुलना एवं अनुप्रयोग संबंध**

| **बिन्दु** | **सर्वेक्षण** | **सह-सम्बन्धीय** |
| --- | --- | --- |
| **डेटा-स्रोत** | स्वयं-रिपोर्ट, साक्षात्कार | सर्वेक्षण, अवलोकन, मौजूदा आँकड़े |
| **नमूना आकार** | प्रायः बड़ा | छोटा से बड़ा, दोनों संभव |
| **विश्लेषण** | वर्णनात्मक आँकड़े, क्रॉस-टैब, r | मुख्यत: r, रिग्रेशन, SEM |
| **कारण-सम्बन्ध** | स्थापित नहीं कर सकता | स्थापित नहीं कर सकता |
| **मजबूती** | दृष्टिकोण, मान्यताओं का व्यापक चित्र | चर-संबंधों की दिशा व शक्ति जानना |
| **उदाहरण** | “कितने प्रतिशत लोग X नीति का समर्थन करते हैं?” | “नीतिप्रति समर्थन और मीडिया-उपयोग के बीच r = .45” |

**4. व्यावहारिक सुझाव (Best Practices)**

1. **मिश्रित-विधि दृष्टिकोण** – सर्वेक्षण से डेटा इकट्ठा कर, उसी डेटा पर सह-सम्बन्धीय विश्लेषण करें।
2. **विश्वसनीय व मान्य माप उपकरण** चुनें—यह परिणामों की वैधता बढ़ाता है।
3. **अनैच्छिक/सामाजिक-इच्छापूर्ण उत्तर** को कम करने हेतु अनाम्यता (anonymity) व स्पष्ट निर्देश दें।
4. **कारण-परिणाम परीक्षण** के लिए, जहाँ सम्भव हो, अनुवर्ती प्रयोगात्मक या अनुदैर्ध्य (longitudinal) अध्ययन योजना बनाएं।

**निष्कर्ष**

सामाजिक मनोविज्ञान में **सर्वेक्षण** बड़ी जनसंख्या से दृष्टिकोण व व्यवहार का डेटा उपलब्ध कराता है, जबकि **सह-सम्बन्धीय विधि** उन्हीं या अन्य चरों के बीच सांख्यिकीय संबंधों की जाँच करती है। दोनों विधियाँ मिलकर सामाजिक व्यवहार के प्रारूपों को पहचानने, भविष्य-वाणी करने और नीतिगत निर्णयों को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, यद्यपि इनमें से कोई भी कारण-परिणाम स्थापित नहीं करती। इसलिए शोध-डिज़ाइन बनाते समय इन विधियों की **सीमाएँ जानना और प्रयोगात्मक या अनुदैर्ध्य अनुसंधानों से पूरक साक्ष्य जुटाना** अत्यावश्यक है।